

॥ नाट स्वराय नमः ॥ तन्नाद्याद्यनसिद्धिविधान ॥ मूलनाट स्वययूक्तन, पूर्वोक्तकमगनाट
 स्वययूक्तयन ॥ ॥ यथ्यरुक्तन न्याम, गाल, खि ॥ वरुलि ॥ आरावाग ॥ संप्रदायवाय ॥ यू
 र्वाककेमने, नावकादिन, सतर्क, संप्रदाययूजा ॥ स्वयमयन, वलि ॥ धूप, दिय, जाय, रुत ॥
 ॥ धनधूनदाय ॥ ॥ यद्युक्तयनयाय, यन्नाद्याखनभा, उमाकादिन, यनवासन, स्वसि, कच
 याव, स्वसि, कससन, एका, प्रका, नगल, निर्वद्यूनयाय ॥ नूद्ययागल, खनदाय ॥ मित्र, नाद
 वा, सयननलाय ॥ ॥ याद्यवकादिन, विनर्जनयाय ॥ ॥ याखनभाया, लाकानस, यननस

२५

सिक्काय गभुकाय गभुलवहाय ॥ गभुलवहलिखिंदकनागस्य उमायनि लवहाय ॥
 ॥ घाघव लुहाय लुहान भूवा गभयि ॥ ॥ मूलमयदलव्यविश ॥ दक्षिण नस्य या
 खनमानकाय ॥ ॥ धनधूनकाय ॥ धनन सिधुन सगन विश ॥ गभुयदन सरं भूवयिन
 गभल ॥ नायदाय युति ॥ सूयया व्याखनरु क दूयक युवगइ करवादन दूयमाल गभा भूवा
 र्ययूजा ॥ दक्षिणयावक ॥ वाचन वलि थाय ॥ ॥ दवसक सानका काय सानविश समय
 विश भूवादाव स ३ मंठल थल लंखन कठा ॥ मिनीविश स ३ याखनस्य द थाय स दवई

या ॥ ॥ समय वयन विरयक ॥ ॥ घाघवनाय ॥ धनद्या दव सिद्धि समा य ४ ॥ ॥
 रं नम ४ श्रीनरुना थाय ॥ ॥ नना क नूना विधन ४ ॥ दूधुका दूय कलठ लूधि
 यादाव खलिमान वमुहला व उकरुकायवक ॥ सनिक दूमान ॥ वागिस यूजा दूवा
 व वन ॥ मूलना दूधव र्ययायदाव यूजायाय धूयदिय जाय मुति यधुनयन ॥ ॥
 धनधूनकाय ॥ कनूगविशमालका यागुवादाव दवसक स्ववर्कनयाव नासिचक ॥ गभ
 शवायात व्याखनया भूनमानन काव वर्य व्याखनमा कनूगयागुर्क थवथव सर्व भूवाय

२५

मिस्र ॥ धन धून काव ॥ ॥ वडुस काव ॥ गिनलन साधयय ॥ मूकन कायाव ॥ जयय ॥
 मनु ॥ ॐ हूँ यमाय दधु रु साय सर्वे समाय हूँ हूँ हूँ री री री तम कवू व नूय म हारु व वाय
 कानन कि सदि गाया मूव न व २ स्वाहा ॥ ॥ धर्म गुन साध स जयय ॥ नाटिका म जयय हृदय सः
 जयय ॥ मादनय ॥ धधून हाव गाल व कू लि ॥ विं सिय दाय ह्राय ॥ या खन दूयक ॥ नाट ॥
 वस म न विरय क य च्छाय लि हाव व हाव स्वा म विरय म गु ल वि न र्जन ॥ मीठ व या स्वा न का या वः
 विरय धन धून काव नृथ ॥ वस वा द व समय च्छय ॥ दक्षिण या च कः ॥ समय विरय स्वा न का का रा

विश्वेश्वर
 वनक
 २३

स नू दल स रं ॥ मू (अय स रं ॥ दक्षि ल ॥ नेम रं ॥ यज्जि रं ॥ वाय रं ॥ डरु रं ॥ वं रं ॥ ध
 भया या व यू या व न य ॥ ॥ गिका न स खाल ३ ॥ वट को न स खाल ३ ॥ मू दय य स खाः
 ल ६ ॥ गिव रु स रं दू ३२ ॥ वडु न य स रं दू १० ॥ दावे स रं दू ४ ॥ वलि न या न २ ॥ धन नू
 दिन माल का वाय ॥ ॥ सूर्यो र्य ४ ॥ मू य य ऊ मा ना ना मू क ना न क स्य भा रु नी सा ध
 नार्थ ॥ श्री सूर्यो य मूर्ध न म ४ ॥ गु न न म स्का य ॥ नू ख गु म गु ला ॥ मू सा स ना य न म ४ ॥ मूः
 ल मूर्क य न म ४ ॥ ॥ गे की कु ४ सर्व सो रा (मं ध वा मू म्हा य रु ट ४ ॥ गे की कु सर्व सो रा य

ਸ਼ੇਖ ੩

स्ववीकनिष्ठायां १ ॥ ३ सर्वसोहाय्यस्ववीमूनामिकायां १ ॥ ३ सर्वसोहाय्यस्ववीमम
 मायां १ ॥ ३ सर्वसोहाय्यस्ववीमूर्तनीयां १ ॥ ३ सर्वसोहाय्यस्ववीमूर्तगुह्यायां १ ॥ ३ सर्वसो
 हाय्यस्ववीमूर्तयोरुद ॥ ॥ **विष्णु** दयाय १ ॥ ३ निरसेस्वाहा ॥ ३ निरवायेवीषट् ॥ ३ कव
 यायद् ॥ ३ सोहाय्यस्ववीमनगुगयायवीषट् ॥ ३ सोहाय्यस्ववीमूर्तयोरुद ॥ ॥ धनंज
 लयागयूजा ॥ गायत्री ॥ **विष्णु** दयाय १ ॥ ३ सर्वसोहाय्यस्ववीधीमर्तु नन्ना **विष्णु** दया
 दयाय ॥ ३ मूर्धन्यायसनाय १ ॥ ३ मूर्धन्यायस्वाययम् ॥ ३ मूर्धन्याययत्रियूर्ध्यामिनमः ॥

१ सु सु सु सु सु नमः ॥ ३ आलाठन ॥ वरुंग ॥ यानिमूडा ॥ धनं आत्मायूजा ॥ ॥ वरुङ्गीन्या
सः ॥ तुङ्ग किनि २ विव्वधीखयत्रीडमारुगावगी मूमायरुट्ट्यायकनाथाययीयू ॥ रुगदः
गिथात्रयत्राययत्रमकलाय कनिष्ठाय ॥ श्रीनिहानन्ददेवनाथयीयू ॥ श्रीकृष्णक
गगलामालिनीशिवय मूनामिकाय ॥ श्रीमूमाद्यनाथयीयू ॥ श्रीसिद्धिदा
लक्ष्मीमूमायमक्षमाय ॥ श्रीगिलाक्षयनाथयीयू ॥ रुद्रानममूमायामूखीश्रीकालिदः
वोर्कन्या ॥ श्रीरुद्रवनाथयीयू ॥ श्रीमहर्गनाथिकाय श्रीमहर्गनाथिकाय श्रीमहर्गनाथिकाय

यः श्रीकामिनाथपांयू॥ किनि२ विभु श्रीखवनीडमारुगवनीकवगलायः श्रीव्यायक
नाथायपांयू॥ ॥ अरुगवनिधात्रशीयवायेयवमकलायेड देवकायः श्रीनिहान
नदयवनाथ॥ श्रीकृदिकगगनमालिनीनिवायमूर्ध्विकायः श्रीमायनाथपांयू॥
ॐ श्रीसिद्धिदागन्धत्रीमूढायपूर्ववकायः श्रीनिलासखवनाथ॥ ६० नमः
श्रीनूथानामखीश्रीकालिविशयेदकिनवकायः श्रीरुखवनाथ॥ ६१ श्रीमहानात्रिकथे
महानात्रिकमन्त्रायडरुखवकायः श्रीकामिनाथ॥ किनि२ विभु श्रीखवनीडमारुगवनीयस्थिम
ॐ ।

वकायः श्रीव्यायकनाथ॥ अरुगवनिधात्रकमलायदययायः श्रीविद्यानन्दयवना
थ॥ ६२ श्रीकृदिकार्यकुलदीपार्यजिन्नमः श्रीव्यामर्नथ॥ ६३ श्रीवर्वायेजिखायः
श्रीडदयनाथपांयू॥ ६४ नमः श्रीवदूयार्यकवरायः श्रीविमलनाथ॥
ॐ श्रीमहानात्रिकथेनगुगयायः श्रीनूमगनाथ॥ किनि२ विभु श्रीकाकनाथः श्रीमन्त्रायरु
ॐ विदनाथायरु॥ ॥ अलयाययूजा॥ ६५ दययायनमः ॥ श्रीजिन्नमः स्वाहा॥ श्रीजिखाययोषट्
॥ ६६ कवरायर्दू॥ श्रीनगुगयायवषट्॥ श्रीनूमन्त्रायरु॥ ॥ धर्ननूययाययूजा॥ ॥ श्रीमे

वथमूनिरि० यशस्वां गीकुसुमूर्तिं जित्वा किंयुगानमामि॥ ॥ वृत्तिकलशमर्चन॥ ॥
 पुनर्मोहनीदात्रयूजा॥ **ॐ श्रीगणेशाय नमः** सर्वजनवशमानयस्वाहा॥ पूर्वदात्र॥ ३
 वावट्टकाय नमः॥ दक्षिण॥ **ॐ श्रीगणेशाय नमः** यन्त्रिम॥ **ॐ श्रीगणेशाय नमः** ६
 नमः॥ डरुनदात्र॥ ॥ यशुनससयूजा॥ ३ वृत्त्ययनमः॥ ३ अग्नय २॥ यमाय २॥ ३ नेम्य
 य २॥ ३ वसूमाय २॥ ३ वायव २॥ ३ कूटत्राय २॥ ३ वृक्षनाय २॥ ३ दुर्गाय २॥ **ॐ श्रीगणेशाय**
 नमः॥ ॥ अक्षयलसयूजा॥ पूर्व॥ **ॐ श्रीगणेशाय नमः** नूनं कसूमादवीयादुर्गा॥ ॥

नूनं अग्नय॥ **ॐ श्रीगणेशाय नमः** नूनं अमदनादवीयादुर्गा॥ दक्षिण॥ **ॐ श्रीगणेशाय नमः** नूनं अमदनादवी ३॥ नेम
 य॥ **ॐ श्रीगणेशाय नमः** नूनं अमदनादुलादवी ३॥ ॥ यन्त्रिम॥ **ॐ श्रीगणेशाय नमः** नूनं अमदनादवी ३॥ ॥ वाय
 य॥ **ॐ श्रीगणेशाय नमः** नूनं अमदनादवी ३॥ ॥ डरुन॥ **ॐ श्रीगणेशाय नमः** नूनं अमदनादवी ३॥ ॥ वृक्षना
 ॥ ३ नूनं अमालिनीदवीयादुर्गा॥ ॥ गणेशदात्रयूजा॥ **ॐ श्रीगणेशाय नमः** नूनं अमदनादवी ३॥
 ३ कन्दर्पकाय २॥ ३ मकरधजाय २॥ ३ मन्मथकाय २॥ ३ कामध्वनीकामाय २॥ **ॐ श्रीगणेशाय**
 नमः॥ ॥ अक्षय॥ नूनं अमदनादवीयादुर्गा॥ ॥

२५

वां ध्यायन् ॥ ॥ नतः प्रिका गयूजा ॥ दक्षिणम् ॥ **ॐ** नमः शिवाय ॥ श्रीयादूर्कायूजयामि
 ॥ ॥ वामं काले ॥ श्रीज्ञान शक्तिदवी श्रीयादूर्का ॥ ॥ मूत्रे ॥ **क्री** क्रिया शक्तिदवी श्रीया
 दूर्कायूजयामि ॥ ॥ ध्यान ॥ वक्रवर्ण दिगुजानीला ललह यधना ध्यायन् ॥ ॥ प्रिका
 गम ध्यायि शक्ति ३ ॥ **ॐ** श्री ॥ सर्वसोरा ग्यधनीदवी श्रीयादूर्कायूजयामि ॥ वलि ॥ **क्री**
 सर्वाकर्षणी मूर्धा दर्शयन् ॥ आवाहनादि र्वदना कन यथ निमः ॥ ॥ छन्द निर्मल वक्र
 वर्ण वक्र वक्र र्वदन ॥ श्रीखण्ड ॥ कमुत्रि ॥ कयूत्र ॥ गायत्रि ॥ कृकम ॥ एते ४ समाप्ताः

शक्तिर्का कृत्वा ॥ ॥ धर्दधन ॥ गुगुलि मूगुल मूकन कयूत्र रूयस्थान यलका मूक
 दूर्वा नत्रमांस ॥ धनगरुशाय ॥ ॥ कदाचिन् नत्रमांसमदनसा मूराव वक्र र्वदन ॥
 धमदनसा मूक पागया दूर्दहनवख ॥ धनरुस्य गुफयायमालख ॥ ॥ दिवा मूलि
 हामवक्रकन ॥ ॥ दीपस्कायनया यशोरा ग्यसून्धवीमनुन ॥ ॥ ध्यान ॥ वक्रवर्ण
 वक्रवर्ण ४ या ॥ **ॐ** श्री ॥ शक्ति विनी कया लवीनह स्माय स्त्रिकासनसंस्त्रिना ॥ ॥ निः
 ध्याय ॥ ॥ **ॐ** श्री ॥ नमः ४ स्त्राहा ॥ माहनीरुय ॥ दैदसवलि ॥ मूसिर्गागादि ६ ॥ रुडकाः

यं १७ ॥ कुरु कन ॥ वं ३१ ॥ वं २४ ॥ वरयन ॥ ॥ गतावाता न्यास ॥ ॐ क्रीं सौ ८ नू माय रू ८ ॥
 वं ३ प्रियू नसू दत्री नू गुळा र्या नम ८ ॥ ३ प्रियू नसू दत्री नर्तनी र्या नम ८ ॥ ३ प्रियू नसू दत्री मे
 मा र्या १ ॥ ३ प्रियू नसू दत्री नू नामिका र्या १ ॥ ३ प्रियू नसू दत्री कनिष्ठा र्या १ ॥ ३ प्रियू नसू दत्री
 कनक लय र्या १ ॥ ३ प्रियू नसू दत्री हृदयाय १ ॥ ॐ प्रियू नसू दत्री शिव सखा हा ॥ सौ ८ प्रियू
 नसू दत्री शिखाय वषट् ॥ ॐ प्रियू नसू दत्री कवचाय हूं ॥ ॐ प्रियू नसू दत्री भगवताय वषट् ॥
 सौ ८ प्रियू नसू दत्री नू माय रू १ ॥ ॥ गृथ माह का न्यास ८ ॥ गृथ धी माह काम नु म्य वृ क्रां सः

२३

११

विनायकी चूद ८ श्री माह का सनख ती दवगा रु ला वी ज्ञानि खना ८ ग कय ८ श्री विद्या प्रल न निखि
 न्या स विनियोग ८ ॥ ॥ सविबु न्द न्यास ८ ॥ ॐ वक्र (समय नम ८ ॥ शिव सि ॥ गय यो वृ न्द सः
 नम ॥ मुख ॥ ॐ माह का सनख ती दवगा य नम ८ ॥ हृदि ॥ ॐ रु ला वी ज्ञान नम ८ ॥ मू ला धाम ॥ ॐ
 सनख ८ ग कि स्थान नम ८ ॥ या दया ८ ॥ ॥ ॐ नू कं र्वं गं दं ॐ हृदयाय नम ८ ॥ ॐ नू यं जं ॐ शि
 व सखा हा ॥ ॐ नू यं जं ॐ शिखाय वषट् ॥ ॐ नू यं जं ॐ कवचाय हूं ॥ ॐ नू यं जं ॐ भगवताय वषट् ॥
 ॐ नू यं १० नू ८ नू माय रू ८ ॥ ॐ मि माह का वरु ८ ॥ ॥ नू निव ॥ नू मुख म लु ल ॥ ॐ यं क

नमः॥ वामनगु॥ डं दक्षक॥ डं वामक॥ डं दक्षनामयूट॥ डं वामनामयूट॥
 दक्षग॥ डं वामग॥ डं दुर्धन॥ डं दुर्धन॥ डं दुर्धन॥ डं दुर्धन॥ डं दुर्धन॥
 ॥ ४॥ जिह्वाया॥ डं वाद॥ डं कूर्य॥ डं मनिर्व॥ डं कलीगुलिषू॥ डं नख॥ डं वाद॥
 द॥ डं कूर्य॥ डं मनिर्व॥ डं कलीगुलिषू॥ डं नख॥ डं दक्षक॥ डं जानो॥ डं युलू॥
 डं यादीगुलिषू॥ डं नख॥ डं वामक॥ डं जानो॥ डं युलू॥ डं यादीगुलिषू॥ डं नख॥ डं दक्षक॥
 डं वामक॥ डं वामक॥ डं वामक॥ डं युलू॥ डं मनिर्व॥ डं कलीगुलिषू॥ डं नख॥ डं वामक॥

डं दक्षक॥ डं दक्षक॥ डं दक्षक॥ डं दक्षक॥ डं दक्षक॥ डं दक्षक॥
 कान्क॥ डं निसहकान्यास॥ ॥ मथमयादिन्यास॥ मथमयादिन्यास॥ मथमयादिन्यास॥
 ४॥ किचुद॥ ४॥ मथमयादिन्यास॥ मथमयादिन्यास॥ मथमयादिन्यास॥ मथमयादिन्यास॥
 सिद्धयविनिथाग॥ ४॥ निसहकान्यास॥ डं दक्षक॥ डं दक्षक॥ डं दक्षक॥ डं दक्षक॥
 नम॥ ४॥ मथमयादिन्यास॥ मथमयादिन्यास॥ मथमयादिन्यास॥ मथमयादिन्यास॥
 न॥ विजाय॥ वामन॥ ४॥ कथ॥ मथ॥ डं कलीगुलिषू॥ डं नख॥ डं वामक॥

नमोऽसिद्धासनाय॥लिङ्ग॥ ॥**क्रीं श्रीं**॥ ४ विष्णुवासिष्ठसिद्धासनासनायनमः॥ नारो
 ॥**कुं कुं कुं**॥ ४ विष्णुवासिष्ठसिद्धासनासनायनमः॥ द्वादश॥ ॥**कुं कुं कुं**॥ ४ विष्णुवासिष्ठसिद्धासनासनायनमः॥
 वीसर्वा विष्णुवासिष्ठसिद्धासनाय॥ मूर्द्धि॥ ४ विष्णुवासिष्ठसिद्धासनासनायनमः॥ ॥**कुं कुं कुं**॥ ४ विष्णुवासिष्ठसिद्धासनासनायनमः॥
 न्यासः॥ **तुं क्रीं श्रीं**॥ विष्णुवासिष्ठसिद्धासनायनमः॥ ध्रुवमण्डल॥ ३ शिवालयकायनमः॥ राल॥ ३ मूला
 यकाय॥ ३ उर्वी॥ ३ मूलदक्षायकाय॥ ३ मुख॥ ३ वहिर्दक्षायकायनमः॥ द्वादश॥ ३
 वरुदक्षायकायनमः॥ नारो॥ ३ मूलदक्षायकाय॥ ३ लिङ्ग॥ ३ धातुदक्षायकाय॥ ३

युक्त॥ ३ वरुदक्षायकायनमः॥ पादो॥ ४ विष्णुवासिष्ठसिद्धासनासनायनमः॥ ॥**तुं क्रीं श्रीं**॥ ४ विष्णुवासिष्ठसिद्धासनासनायनमः॥
 वीनिहा श्री॥ ललाट॥ **३ मूला**॥ रुग्मालिनीनिहा॥ मुख॥ **३ मूला**॥ निवृत्तिना॥ दक्षनय॥ **३ मूला**
 रुग्मालयनमः॥ वामनय॥ **३ मूला**॥ वक्रिवासिन्धो॥ दक्षकूर्च॥ **३ मूला**॥ महाविश्वव्रीनिये॥
 वामकूर्च॥ **३ मूला**॥ विष्णुद्वीपनिहाये॥ दक्षनाभायुट॥ **३ मूला**॥ ललाटनिहाये॥ वामनाभा॥
३ मूला॥ कूलसुन्दरीनिहाये॥ दक्षगर्भ॥ **३ मूला**॥ निहाये॥ वामगर्भ॥ **३ मूला**॥ नीलुयताका॥ दुः
 क्षोभ॥ **३ मूला**॥ विजयायी॥ मूला॥ **३ मूला**॥ सवर्मगलानिहाये॥ दुर्द्धदन्त॥ **३ मूला**॥ कालामालि

नीनिहायी ॥ मूलधन ॥ ३ मूँ विविधानिहायी ॥ मूलधन ॥ नैकीं मूँ ४ गियूत्रसुंदरीनिहायी
 ॥ नागधन ॥ निहान्यास ॥ ॥ नैकीं मूँ मूँ वसिनीवायवनायी ॥ निवसि ॥ नैकीं ३ ॥
 कूँ कामधनीवायवनायी ॥ ललाट ॥ नैकीं ३ ॥ मारिनीवायवनायी ॥ मूलधन ॥ ३ ॥ नैकीं ३ ॥
 मलावायवनायी ॥ कं ॥ ३ ॥ नैकीं ३ ॥ मूलधन ॥ ददय ॥ ३ ॥ नैकीं ३ ॥ अयिनीवायव
 वनायी ॥ ददयाध ॥ ३ ॥ नैकीं ३ ॥ सवैज्वनीवायवनायी ॥ लिहा ॥ नैकीं ३ ॥ कूँ कोलिनी
 वायवनायी ॥ मूलधन ॥ ३ ॥ मूलधन ॥ नैकीं मूलधन कामगिप्योत्तर

भोगीनाथामिक कामधनीदवीबूदात्मनकीधीया ॥ मूलधन ॥ ३ ॥ कूँ मूँ सूर्यवकपूर्वनि
 योत्तरदुष्टीनाथामिकवकनीविष्णुत्मनकीधीया ॥ ददय ॥ ३ ॥ सौ मूँ सा ॥ मचकजालधन
 वधौनाथामिकरुगमालिनीवक्रात्मनकीधीया ॥ मूलधन ॥ नैकीं ३ ॥ कूँ सो ४ कूँ मूँ मूँ
 वक्रकडशानयी ॥ चर्यानन्दनाथामिकधीमरुगियूत्रसुंदरीयवक्रात्मन ॥ ३ ॥ कूँ ३ ॥
 किधीया ॥ निवसि ॥ मूलधन ॥ ॥ ३ ॥ नैकीं मूलधन वायविकार्यगियूत्रसुंदरी ॥ ३ ॥ कं
 द ॥ ॥ ३ ॥ कूँ मूँ कूँ विद्यामलवायविकार्य ॥ गियूत्रसुंदरी ॥ ददि ॥ ॥ ३ ॥ सौ ४ सौ ४ निव

गलवापिकाये विपुत्रसुन्दर्ये नमः॥ रुमल्ल॥ ॥ नैकै सो ४ क वल्ल लङ्गी रुस करु लङ्गी सक
 लङ्गी सर्वगलवापिकाये विपुत्रसुन्दर्ये २॥ मोलो ॥ गलवा स॥ ॥ नैकै कुं मरु विपुत्रः
 सुन्दरी दयाय २॥ नैकै कुं निखाये वषट् ॥ नै ३ कुं कुं कवचाय दू ॥ नैकै कुं कुं नगाय वी
 वट् ॥ नैकै कुं कुं मूसाय रु ॥ नै ४॥ नवमं यथादि क व ॥ गलान्न न न्यास॥ ॥ नै नै कुं कुं
 नैकै सो ४ कुं कुं १३ ग्रामरु विपुत्रसुन्दरी धीपादूकं ॥ धनधवमालसभाया ल गिर्याङ्गलि
 गानि ॥ ॥ नैकै कुं ४ रु रु स ४ समूर्द्धनि पूर्याङ्गलि दत्ता वयन् ॥ ॥ सह दय मूक र्या ग ॥

वाला कर्म मधुला रासां वडु वी रुं प्रिलावनां । पागां कुं गववालीनिं धनयनीं रुडाम्यहं ॥
 नै माला कुं सो रु रु स ४ रुं निखनिन सि पूर्याङ्गलि दशा न ॥ ॥ धवद्ववन श्रीनयाव
 गथयवम मधुवी ठां इल्ले मूथे दथव मूत्त व क व ल्ल वडु वी रुं कुं सुपूय रावयाव थम
 गथ मूथे यवम मधुवी वानया दाव माने स पूजा दाव थम सु सू वूय या दाव थवन
 वी व स दू या दाव मू धा व स लिंग नारी रुदय गा व स ललाट सहस्र दल टी विद्या व क
 व सहस्र दल स यत्र निवस वा सम व स या दाव नय ॥ ॥ याव कुं व कुं मूद्र या य नि धा या ॥

॥ जै हूँ लोकाय नमः ॥ क्रीं रु वल्ला काय २ ॥ सो ४ सु लो काय २ ॥ मू मू नमः पु पाय नमः ॥ व का
 वि मू ना वि स पू याय नमः ॥ ॥ न मा द वा (य) श्री व का त्म ना म (य) ॥ त्रि का ल व द्वा ग मू द्दु द लः
 विलि ॥ ॥ श्री या ग पू जा ॥ वै ३ वा य क म लु लाय २ ॥ ॥ द्द द या दि व र्ण ग पू जा ॥ वै ३ मू ध
 म य द द ग क ला त्म न व क्रि म लु लाय २ ॥ ध न म वि पू जा ॥ वै ३ दू रू ट् या ग स ला व म वि
 न य ॥ वै ३ दू मू व सू य द द्वा द ग क ला त्म न धी या ग पू जा या मि ॥ ध यो ग स ड या न य ॥ ॥ वै ३
 रू द्द व वी सा य ॥ दौ दौ क्रीं वू स ४ द व ड रु ज या य ॥ वै ३ मू काम य द वा उ ग क ला त्म न धी

या ग मू नाय नमः ॥ हूँ हूँ हूँ हूँ म र्थ व लाय नमः ॥ ॥ क्रीं ध न मू डा ॥ क्रीं म ल्हा मू डा ॥ नै थानि
 मू डा ॥ ॥ वै ३ हूँ रू मू न न्द रु व वा य सू रू सू ख द वो वो ष ट् ॥ वै मू मू न मू मू ना रु व मू मू न व वि नि
 मू मू नै था व य २ मू मू नै क वू २ मू मू नै श्व यो न मः ॥ ध न मू मू न मू डा न वा ल ॥ मू ल म लु न सै स्का य य
 य ॥ रु स दू म ल व व यू स रु दू म ल व व यी मू न न्द रु व वा य सू रा द वो वो ष ट् ॥ ॥ ध श्री या गाः
 मू न वि न्द यु पू या ग स न य ॥ ध श्री या ग सै वि न्दू मू डा ग न र्थ न या य ॥ ३ ग ल य नि ना थ श्री या दू क्रीं
 न र्थ या मि ॥ ३ व दू क ना थ या दू क्रीं न र्थ या मि ॥ ३ दू ग या ल ना थ न ॥ ३ या गि नी न ॥ ३ व द्वा नि न ॥

सनाय २॥ त्रैलोक्यो ४ त्रियूषणीयानां वृद्धासनाय २॥ ऊँ त्रैलोक्यो ४ त्रियूषणीयानां वृद्धासना
 य २॥ ॐ त्रैलोक्यो ४ त्रियूषणीयानां वृद्धासनाय २॥ ॐ त्रैलोक्यो ४ त्रियूषणीयानां वृद्धासनाय २॥
 ॐ त्रैलोक्यो ४ त्रियूषणीयानां वृद्धासनाय २॥ त्रैलोक्यो ४ त्रियूषणीयानां वृद्धासनाय २॥
 ॐ त्रैलोक्यो ४ त्रियूषणीयानां वृद्धासनाय २॥ त्रैलोक्यो ४ त्रियूषणीयानां वृद्धासनाय २॥
 यत्र गिवडासंगयाह नयाय वमध्वनीं मानसपूजायादाव, त्रिखण्डमूढावधवयाव, नाग
 पूजाधनावहियानयन् ॥ ॥ आवाहन ॥ ॐ नमः शिवाय वदवताये ॥ अयं त्रैलोक्यो ४ त्रियूषणीयानां वृद्धासनाय २॥

लक्षातिवृष्टिनि। वडाक वक्रिमध्वसु दिव्यामृगस्य वृष्टिनि ॥ अननिविश्ववायीर्ल कृणु लाका
 वृष्टिनि। मातृम्रियथ गायत्री, ग्राहिमां त्रियूषणीयानां वृद्धासनाय २॥ अयं त्रैलोक्यो ४ त्रियूषणीयानां वृद्धासनाय २॥
 वनकामयी, त्रैलोक्यो ४ त्रियूषणीयानां वृद्धासनाय २॥ त्रैलोक्यो ४ त्रियूषणीयानां वृद्धासनाय २॥
 भाद्रपदीयिनी गिव, त्रैलोक्यो ४ त्रियूषणीयानां वृद्धासनाय २॥ त्रैलोक्यो ४ त्रियूषणीयानां वृद्धासनाय २॥
 वृद्धासनाय २॥ त्रैलोक्यो ४ त्रियूषणीयानां वृद्धासनाय २॥ त्रैलोक्यो ४ त्रियूषणीयानां वृद्धासनाय २॥
 यजयकुटुम्बिकात्, लाकवृद्धमार्गवृद्धात्, त्रैलोक्यो ४ त्रियूषणीयानां वृद्धासनाय २॥ त्रैलोक्यो ४ त्रियूषणीयानां वृद्धासनाय २॥

३५

दिग्भूतकाकात्रयूया, भूतनक्तुकाकुकाटीश्वरीकिंवर्णयत्वं, सवृन्ददवीमरुवीभश्वरीमहालो
 वीसिद्धितागश्वरी, कोलिनीकोलाञ्जात्रयूयापलावयवर्धयिय, नक्तुन्दमूलात्ससिद्धिविर्जा
 पुनकात्मनत्वं, प्रसूफसुसर्पानूकात्रयूरु, कुकात्रसधवोषट् रुट् दूँ दूँ कात्रश्वरासिगः कंका
 लयूयाप्रमायितमहाद्यात्र, संसावसिंधूयवाहमूरुकात्रकार्त्तं, कलागीनयूयाविश्वसंसावयायका
 ल, सिंगासृष्टिसंहात्रविलोकयूया, श्यत्रावृक्षगकिंमिपूत्रगीयर्त्रनिवालयदप्रनियदादिनिः
 थिवाउगीकलायूर्ध्वयूयानिमवादित्रुक्षकल्यादिभूतसूया, कचित्पूष्टियालसंहाय्यनल

२०

गुरुयनि, त्वनृगृहीदिष्टियाभूलाकान्, शकुकुल्यारुवलत्रयू, त्वमकयूपाङ्गगयूर्ध्वय
 यीत्वं, वाक्कीत्रोदीषूजनादनीत्वं, रुत्रवीत्वंयूर्ध्वमखलुवायीवृक्षाद्यूर्ध्व, कवलकयूसिः
 कर्त्तृहतिर्विष्मत्तिका, निलखनिर्वाणनिलाल्त्वंनिष्कलत्वं, सकलासरुप्रमूर्द्धयः सरुप्र
 गीवासरुप्रनगा, सरुप्रवाद्रुसरुप्रवत्रणयत्रावृक्षलखा, पृथिव्यापःमआयवनाकागस
 यूया, इन्वर्द्धितमआमयी, यत्रावृक्षगकिंवर्त्तनावनकीर्त्तनावीश्वयूया, यद्राक्षयूर्ध्वन्दुकानि
 नृनृणधवा, प्रियूत्रसूदनीवृन्दवदनि, वल्लममयीकिंवाटिमलिमयकुलुलनूनधवत्तम

थलात्रयकामत्रयविधायिनी। सूत्रन्यानि कनयूत्रजनप्रानयमानात्रयल्लयां ननुत्रयत्र
 विन्दे नमस्तुता ३६ कमस्तुति काद्यायनी कमस्तुति यत्रदवी जन
 नीविश्वयायिनी। लिङ्गमूशाननिर्हिद्य निगजायत्रमश्वत्री॥ रुद्रवतनमस्तुत्य कामाक्षाः
 दनसूदनी। सूक्तनायथमर्जन निर्गतायिपूत्रश्वत्री॥ ॥ कुं कुं कुं ४ महायद्रवनाक्तु
 यनमानन्दनन्दिन। उगलयहि नमातत्रकहियत्रमश्वत्री॥ ॥ अस्मिन्मधुलसानिधक्
 वृक्षाहा॥ ॥ कुं कुं सो ४ दवदवी मूर्तिवत्रिकल्यामि॥ नै ३ श्रीमहायिपूत्रसूदनी वृक्षागच्छ

२०० रुतिष्ठ २ ०० रुसनिहिना रुत ०० रुसनिवृद्धारुत अगाविष्ठानकृत् २॥ दू मूत्रगुच्छ
 ॥ कुं कुं मृत्तिकृत् ॥ श्रीरुत्संयक २ नैयानिमृदयासकलीकवर्ण॥ ॥ वान॥ वालाकं मृत्तला
 रुसां वृत्तवां दू गिलावर्ण। यानां कृत्तववाहीति धात्रयनी रुजाम्भरुं॥ ग्यांजलि ४॥ नै कुं सो ४
 कुं कुं सो ४ महा श्रीगिपूत्रसूदनी श्रीयादकायूजयामि॥ यादथा ४ पूष्यांजलि॥ वलि॥ गायत्रीनयू
 जा॥ नैगिपूत्रादवीविमरु कुं कामश्वत्रीधामहि ॥ ३ ॥ मूलमन्त्रनगर्वर्ण॥ ॥
 नै कुं सो ४ यात्री श्रीगिपूत्रसूदनी नमः॥ ३ गिपूत्रसूदनी नमः॥ ३ गिपूत्रसूदनी नमः॥ ३ गिपूत्रसूदनी नमः॥

花

२२

[illegible]

२१८

ॐ क्रीं बक्रि वासि नो स्वाहा ॥ ५ ॥ ३ ॐ डं ड्रीं रूं रूं स ४ किं नद द व स्वाहा ॥ विजयी ॥ ॐ ३ मूं ॐ ड्रीं नि
वदू ह्ये यादू कां ॥ १ ॥ ॐ ३ मूं ॐ ड्रीं सनमानि व स स्वाहा ल विमानि ह्ये यादू कां ॥ ॐ ड्रीं
क्रीं रूं रूं रूं रूं रूं ४ मूं रूं रूं रूं ल विना यादू कां ॥ ६ ॥ ॐ नूं क्रीं सो ४ कूल सून्य नीति ह्ये यादू कां
॥ २ ॥ ॐ ड्रीं क्रीं वूं स ४ रुस कल व ठ रुस कल व ठी रुस कल व ठी ४ ६ नि ह्ये नि ह्ये यादू कां ॥ १० ॥
ॐ क्रीं रूं रूं क्रीं श्रीं क्रीं नूं नूं नि ह्ये म द द व दूं रूं ड्रीं नूं नील यमा का ह्ये यादू कां ॥ ११ ॥ ॐ ॐ ड्रीं
श्रीं मूं मूं नूं विजया ह्ये यादू कां ॥ १२ ॥ ॐ ३ डं ड्रीं ॐ सर्वे मङ्गला यादू कां ॥ १३ ॥ ॐ ॐ नमो

23

गवनिहालामालिनीं हृद् हृत् साहाडं ग्रीयाद् ॥ १४ ॥ जैं ३ अं वं कां मूं विविगानि ह्या ग्रीयाद् कां ॥ १५ ॥
 ॥ जैं ३ अं वं कां मूं नूं ४ विगायनसुन्दरी ग्रीयाद् कां ॥ १६ ॥ झूं ४ कुं डूं मूं महापियनसुन्दरी म
 हाविद्येश्वरी ग्रीयाद् कां ॥ १७ ॥ जैं यात्रायै ग्रीयाद् कायक नमः ॥ १ ॥ कीं अयत्रायै याद् कां ॥ सो
 ४ यत्रायत्रायै याद् कां ॥ धनं नं वलि ॥ वृनिषाठ गनिह्यायूजा ॥ ॥ वठुत्रयादहि नमस्याय
 त्रयान्कगुत्रकमयूजा ॥ जैं कां ग्रीयत्रगिवानन्दनाथयाद् कां ॥ ३ यत्रयका गनन्दनाथयाद् कां ॥
 ३ यत्रागकुम्भा ॥ ३ कुलेश्वरानन्दनाथ ॥ ३ कामेश्वर्याम्बा ॥ ३ कोलेश्वरानन्दनाथ ॥ ३ वक्रार्थ

रुद्रार्थमायादुर्का ॥ ३६ उरु रुद्रवनाथ डुं डीं डूं कोमार्थमा ॥ ३७ मं कां धरु रुद्रवनाथ मं डीं डूं
 वेष्मवाम्नायादुर्का ॥ ३८ उ नरु रुद्रवनाथ ॐ डीं डूं वा ना ही द वाम्नायादु ॥ ३९ उं न क या द रुद्र
 वनाथ उं डीं डूं लू न्दा वी द वाम्नायादु ॥ ४० डीं ही व न रुद्रवनाथ डीं डीं डीं श्री वाम्नायादु ॥
 ४१ मूं स र्वा न रुद्रवनाथ मूं ४ डीं श्री नू म ह ल क्शी म्ना श्री यादु ॥ ध न म्ना नि मा दि या दि ग रु र्वा ॥ ॥
 उ उ न म या नू न लाल लखा स यू जा ॥ उं डीं श्री दा सर्व र्सी कारिणी मू डा द वी श्री यादु ॥ ४२ डीं सर्व वि द वि
 णी मू डा श्री यादु ॥ ४३ डीं सर्व क र्षिणी मू डा श्री यादु ॥ ४४ डूं सर्व व र्णी क वी मू डा श्री यादु ॥ ४५ स ४ सर्व र्मा

दिनी मू डा श्री यादु ॥ कां सर्व म हं कृ ण मू डा श्री यादु कां यू ज या मि न र्थ या मि ॥ डीं वि ख ण मू डा श्री य
 द ॥ डूं सर्व ख व र्णी मू डा श्री यादु ॥ ४६ डीं सर्व वी ज मू डा द वी श्री यादु ॥ उं सर्व या नि नि मू डा द वी श्री य
 द ॥ ४७ व क्का ण्मा दि स्म न ॥ उं डीं श्री मूं मूं सो ४ वि यू ना नि णा व क ष वी श्री यादु ॥ उं डीं सो ४ व मा ४ यु कः
 ट या नि न म्ना क मा रु न व क स य वि वा ना ४ म वा य वा र ४ यू जि ना ४ म नु ॥ डीं सर्व र्सी कारिणी मू डा
 ये न म ४ ॥ य थ म व र्वा ॥ डीं श्री वा उ ण द ल य द्वा स ना य न म ४ ॥ उं डीं श्री नू का मा क र्षि नि नि णा क ला द
 वी श्री यादु कां यू ज या मि न र्थ या मि ॥ ४८ डूं व द्वा क र्षिणी श्री यादु कां ६ ॥ ४९ मूं का वा क र्षिणी श्री

यादूकां ॥ ३००॥ गद्याकर्षिणी ग्रीयादूकां ॥ ३०१॥ स्यर्गकर्षिणी ग्रीयादूकां ॥ ३०२॥ ब्रूयाकर्षि
 णी ग्रीयादूकां ॥ ३०३॥ मंत्रसाकर्षिणी ग्रीयादूकां ॥ ३०४॥ मंत्रगंधाकर्षिणी ग्रीयादूकां ॥ ३०५॥ विलाकर्षिणी
 ग्रीयादूकां ॥ ३०६॥ वेर्योकर्षिणी ग्रीयादूकां ॥ ३०७॥ स्मृत्याकर्षिणी ग्रीयादूकां ॥ ३०८॥ नामाकर्षिणी
 ग्रीयादूकां ॥ ३०९॥ अंतीकाकर्षिणी ग्रीयादूकां ॥ ३१०॥ आत्माकर्षिणी ग्रीयादूकां ॥ ३११॥ नू
 मृगाकर्षिणी ग्रीयादूकां ॥ ३१२॥ नैकी श्री नू ४ ग्रीयाकर्षिणी निर्या ग्रीयादूकां यूज्यामि नययमि ॥
 नैकी सो ४ नियूत्रग निर्याचक्र ग्रीयादूकां ॥ यस्मिमावरुन यूजा ॥ एतायु फयागिन्या ४ सर्वाः

२ अखिदूद आस

ग्रायूत्रकचक्र समूहा ४ ससिद्धय ४ सायूधा ४ सवाहना ४ सयत्रिवात्रा ४ सर्वोपवात्रे ४ संपूजिना
 ४ सन्तु ॥ आवाहनादि ॥ श्रीसुर्वविद्यावनीमूर्धादर्शयन् ॥ द्वितीयावत्रर्न ॥ २ ॥ x ॥ नूदलः
 कमलायनम ४ ॥ नैकी श्री नू १३ नूनअकसूमादवी ग्रीयादूकां ॥ पूर्व ॥ ३ कै ५ नूनअमख
 ला ग्रीयादूकां ॥ दक्षि ॥ ३ वै ५ नूनअमदना ग्रीयादूकां ॥ दक्षि ॥ ३ वै ५ नूनअमदना कुवा
 ग्रीयादूकां ॥ उरु ॥ ३ वै ५ नूनअमखला ग्रीयादूकां ॥ नूदल ॥ ३ वै ५ नूनअवगिनी ग्रीयादूकां ॥
 ॥ नमः ॥ ३ वै ४ नूनअ ॥ दू ॥ ग्रीयादूकां ॥ वायवा ॥ ३ वै ४ नूनअमालिनी ग्रीयादूकां ॥ ॥ ॥

ज्ञान॥ जैं कौ सो ४ को ४ गियू न सुन्दरी चक्र श्वरी श्रीयादू कां ६ ॥ न मायु क मयथा गिन्य ४ सर्व संका
 रुक वक समुद्रा ४ समिद्धय ४ सायूध ४ सासना ४ सवारुना ४ सर्वोयवात्रे ४ सयूजिना ४ सनु ॥ आवा
 रुनादि ॥ कौ सर्वो कविनी मूद्रा दर्शयन् ॥ हनीया ववर्ण ॥ ३ ॥ ॥ चतुर्दशायवकायनम ४ ॥ जैं ३
 सर्व संकारिणी गकि श्रीयादू कां पूजयामि नर्ययामि ॥ ३ सर्व विद्यावत गकि श्रीयादू कां ६ ॥ ३ स
 र्वो कविनी गकि श्रीयादू कां ६ ॥ ३ सर्वो ह्लादिनी गकि श्रीयादू कां ६ ॥ ३ सर्व संमाहिनी गकि श्री
 यादू कां ६ ॥ ३ सर्व संरिनी गकि श्रीयादू कां ६ ॥ ३ सर्व ईरिनी गकि श्रीयादू कां ६ ॥ ३ सर्व वगीक

गकि श्रीयादू कां ६ ॥ ३ सर्व नीडिनी गकि श्रीयादू कां ६ ॥ ३ सर्वो न्मादिनी गकि श्रीयादू कां ६ ॥ ३
 सर्वो र्थसाधिनी गकि श्रीयादू कां ६ ॥ ३ सर्व संयलि नूयिनी गकि श्रीयादू कां ६ ॥ ३ सर्व मनुमयी
 गकि श्रीयादू कां ६ ॥ ३ सर्व दद कर्यकरी गकि श्रीयादू कां ६ ॥ जौं कौ सो ४ गियू न वासिनी चक्र श्व
 री श्रीयादू कां पूजयामि नर्ययामि ॥ न मा ४ समरु ४ संयदायक मया गिन्य ४ सर्व सोरु ग्यदायक च
 क समुद्रा ४ समिद्धय ४ सायूध ४ सासना ४ सवारुना ४ सयविवात्रा ४ सर्वोयवात्रे ४ सयूजिना ४ स
 नु ॥ जैं सर्व वगीकरी मूद्रा दर्शयन् ॥ यज्विमादिवायवान् ॥ चतुर्थो ववर्ण ॥ ४ ॥ ॥ वक्रदश

दलचक्रायनमः॥ वैकुंठी श्री सर्वसिद्धिप्रदायवी श्रीयादूकां पूजयामि नमस्कृत्यामि ॥ ३ सर्वसं
 यन्प्रदायवी श्रीयादूकां ॥ ३ सर्वप्रियंकरीयवी श्रीयादूकां ॥ ३ सर्वमंगलकात्रिणीय
 वी श्रीयादूकां ॥ ३ सर्वकामप्रदायवी श्रीयादूकां ॥ ३ सर्वदूरखविमोहनीयवी श्रीयाः
 कां ॥ ३ सर्वमृगयगमनीयवी श्रीयादूकां ॥ ३ सर्वविश्रुतिनाशिनीयवी श्रीयादूकां ॥
 ३ सर्वोद्गमसूचनीयवी श्रीयादूकां ॥ ३ सर्वसौभाग्यदायिनीयवी श्रीयादूकां ॥ ३ वैकुंठी ४
 प्रियंवा श्रीचक्रस्वनीयवी श्रीयादूकां ॥ ३ ॥ ४ समस्त ४ कूलकोलयागीन्य ४ सर्वार्थसाधः

कवकसमूहा ४ समिद्धय ४ सायुधा ४ सासना ४ सत्कारना ४ सयवितात्रा ४ सर्वार्थसाध ४ संपूजिता
 ४ सन्तु ॥ ३ ४ सर्वान्मादनीमूर्द्धिदोयन ॥ यत्रमावर्तनी ॥ ३ ॥ ॥ श्रीनन्दनदलचक्रायनमः ॥
 वैकुंठी श्री सर्वज्ञादवी श्रीयादूकां पूजयामि नमस्कृत्यामि ॥ ३ सर्वज्ञकीयवी श्रीयादूकां ॥ ३ सर्वः
 स्वयंप्रदायवी श्रीयादूकां ॥ ३ सर्वज्ञानमयीयवी श्रीयादूकां ॥ ३ सर्वव्याधिविनाशिनीयवीः
 श्रीयादूकां ॥ ३ सर्वधात्रस्त्रयिणीयवी श्रीयादूकां ॥ ३ सर्वयायहवायवी श्रीयादूकां ॥ ३ स
 र्वानन्दमयीयवी श्रीयादूकां ॥ ३ सर्वकास्त्रयिणीयवी श्रीयादूकां ॥ ३ सर्वप्रियंकरुलप्रदाय

215

[illegible]

यमहादिनी। वृद्धाकि महादवी कामध्वनिनमा मुन॥ ॥ गिकागदकस॥ ॐ ॐ ॐ सूर्य
वक्रजालधलेयी ॥ ० वल्ली गनाथामिक श्रीवक्रजवदीदवी विष्णुत्मनाकि श्रीयादू ॐ का
॥ ॥ सूर्यवक्रसिगादवी जालधेयी ० निवासिनी। विष्णुनाकि महादवी वक्रजवनि नमा
मुन॥ ॥ गिकागवामस॥ ३ सो ॐ सामवक्रपूर्वगि विगदक वदुली गनाथामिक श्रीरुग
मालिनीदवी वक्रात्मनाकि श्रीयादू ॐ का ॥ सामवक्रसिगादवी पूर्वयी ० मनाहवा वक्रनाकि
महादवी रुगध्वनिनमा मुन॥ ॥ ३ ॐ ॐ ॐ ॐ १ गियूनाम्मादवी श्रीयादू का ॥ विशामनुपदीद

वी. महाप्रियूषरुवर्वा॥ निर्यानि वमवक्रसूँ. नायिकानवर्माग्रयन्॥ एता॥ समस्तान्निग्रहस्यथागि॥
 सर्वसिद्धियदवक्रसमूहा॥ समिद्धय॥ सायूधा॥ सवारुना॥ सयविवाया॥ सर्वोयवात्रे॥ पूजिता॥ सन्तु-
 गयिना॥ सन्तु॥ म्मातारुनादि॥ श्रीवीजमूर्त्तयर्जयन्॥ ॥ म्मष्टमावर्ग॥ ६ ॥ ॥ विन्दुचक्रयनम॥
 ॥ वैकुण्ठं श्रीवैकुण्ठं सोऽवु॥ सवर्गजामयथासमुद्रचक्रउद्यानयी॥ ० चर्यानन्दनाथत्मकश्रीमहाप्रि-
 यूसुन्दरीदवीय॥ ॥ वैकुण्ठं श्रीवैकुण्ठं सोऽवु॥ सवर्गजामयथासमुद्रचक्रउद्यानयी॥ ० चर्यानन्दनाथ-
 त्मकश्रीमहाप्रियूसुन्दरीरुद्राविका॥ ॥ वैकुण्ठं श्रीवैकुण्ठं सोऽवु॥ सवर्गजामयथासमुद्रचक्रउद्यानयी॥ ० चर्या-
 नन्दनाथत्मकश्रीमहाप्रियूसुन्दरीरुद्राविका॥ ॥ वैकुण्ठं श्रीवैकुण्ठं सोऽवु॥ सवर्गजामयथासमुद्रचक्रउद्यानयी॥ ० चर्या-
 नन्दनाथत्मकश्रीमहाप्रियूसुन्दरीरुद्राविका॥ ॥ वैकुण्ठं श्रीवैकुण्ठं सोऽवु॥ सवर्गजामयथासमुद्रचक्रउद्यानयी॥ ० चर्या-

विंवावर्गं श्रीवैकुण्ठकलावर्गसमूहं टीपीनस्तनीसुन्दरी॥ याहीवाङ्मिदूरायदधर्मा
 यथावृत्तसायवा॥ नानासूत्ररूपिणानि सूक्तानां गीर्णवेन्दव॥ ॥ ३॥ श्रीवैकुण्ठं श्रीवैकुण्ठं ॥
 श्रीप्रियूषरुवर्वाचक्रस्ववीनिर्याग्रीयादूर्कायूज्यामिदुर्गयामि॥ ॥ यना ॐ ॐ ॐ मूल
 मन्त्रनयूलदवीसकयूनगिर्याङ्गलियाय॥ ॥ वैकुण्ठं श्रीवैकुण्ठं ॥ समस्त॥ यवायवागिग्रहस्यथा
 गिन्या॥ सर्वानन्दमयमहाचक्रवेन्दवयवर्गवक्रस्वयूयिलियवामृगकि सर्वचक्रस्ववि सर्वमन्त्र
 स्ववि सर्वविद्यस्ववि सर्ववीनस्ववि सर्वयी॥ ० स्ववि सर्ववा॥ गस्ववि सर्वथा॥ गस्ववि सर्वसिद्धस्ववि

सुविप्रसुथा। दनुनाधनदलेवनागकर्त्तुः ४ यवतुवान् ॥ रुक्मावावीप्रसिद्धश्चरुक्कूटाकाम
 यहासूत्रशायुगनाप्रोत्रवलेव। लवाधावत्सलसुथा ॥ छुक्कुरु ४ यगलस्य शुभसोदरुक्
 सुथा। कयान्कमुपयागतु। कययालडदादना ४ ॥ ययागदर्भमूद्राय सुनसुक्कययालक
 ४ ॥ गवावर्त्तविहीनासु। कययालस्यगुर्दग ॥ ॥ एकलिंलायर्दकारं भग्नतवरुयावः
 रु ४ ॥ महालक्ष्मीर्वनद्याय। जालामुखावससदा ॥ एकवृक्कवटवाथ विगलवदनासुव ४
 द्योतावावाचुहावास्ययवखलुजलाव ४ ॥ संगमिन्निधवाय ४ यवर्त्तनमयूगसुथा निमेषय

वनिप्रहा निवावायनिरुद्रक ॥ वसकुरुधनाभक्ता यक्कवानवकादुक्क ४ ॥ नूत्रव्यसवर्गविद्या
 दद्यानमधुक्कवसुन ४ ॥ वरु ४ यष्टिर्महावीर्या मात्रयित्वास्मिनाजगत्। गयक्कयसदाकालं
 वलिपूजानिवदयन् ॥ चलायसुगह्याला दिजायागृह्णतवर्त्त। रूवगनयूयकीव स्वायविव
 लिकीकि ४ ॥ निर्याधिकात्रिवलाय ४ कयादाण्णवगव। वव्वययिं गकभस्वयिद्रु ४ यिद्रु
 लावन ४ ॥ द्रुक्क कवालाश्रयुय ४ कयालरुवलेमकुला ४ काभीवर्त्तदधीखलु मृगलिमीनरु
 नुष ४ ॥ यव्यवभुसुथायिद्रु द्योयिद्रुयमुगुजुले ४ ॥ रायितामधियाय ४ कमयूजायवायले ४ ॥

द्यौतावाये श्वगीमाये, सुर्षिना कामदा सदा ॥ उँ क्रीं कूं मूमूकाय, मूवमव २ कृपया लमहा वल, कवि
 लज्जटा रात्रा सुनयिन गङ्गा लामुख, गधयूर्ध्व वलियूजा गृह २ रवेव वृषण उ २ मू २ ख २
 खल २ लरु २ ४ मला रामया धियमय स्वाहा ॥ नमि मूजया दि कृपवालि ४ ॥ ॥ मनुजानन सर्व
 र्वा, विधिवन्तु वलिदानम ४ ॥ नदूर्ध्व कौरुवरुण, नायसर्गादि कौरुवन् ॥ निर्यूपमदिता वाजा, सर्व
 र्वा वल्लरुवरुण ॥ नमिना लुरुन कामान्, सयमभव सदा ऊय ४ ॥ मूजया दिरुल ॥ ॥ नै क्रीं ऊय
 श्वविऊय श्वव, ऊयनी वायवा जिना, नै दारुद्रा ऊया हीमा, कला र्वे वाष्टका रुथा ॥ दिव्याग्नि

मलायाग्नि, सिद्धियाग्नि गङ्गा श्वरी ॥ साकिनी कालवागीव, उँ क्रीं क्रीनी गायत्री ॥ गंही वाद्याषः
 ली सुला, पवना झाडना गिका, र्ही वनाय मदान्दा, कालामुखी नथेवय ॥ यि गायत्री रुमिनी
 र्वेव, यक्री धूर्जटी गथा ॥ विवरु क सर्वसिद्धि, उँ क्रीं क्रीनी गायत्री ॥ क्री कात्री रासवादी र्वा
 धूमा की कलहयिया ॥ मानजी का कृष्टि ज्य, तथा गियू वयन की ॥ वा कसी थापना दाव, न
 का की विष्णु वृषिणी ॥ ऊय कत्री वयो दीव, रुकि सुस्तान राऊनी ॥ वीवरुद्र मला काली, कः
 काली विकृतानना ॥ काधला ही मरुद्राव, वायू वगा रुयानना ॥ वा क्री ववे क्री वयो दी, र्वि

काळं श्वनी तथा वायाही नावसिहीव, गितादूनी वषष्टिका ॥ वृंदयवामलायाग्नि, वेलिंगुळ
 नुमसदा ॥ क्रीवउ४ वषष्टियागिनीखावलिगुळ २ सर्वगानिकुपू २ ममसिद्धिकुपू २ रुढसा
 हा ॥ वृन्निवउ४ वषष्टियागिनीवलि४ ॥ ॥ ऊं रुदिवान्ननीक, दगदिगुरुवन, सफयाग
 लमूल, कयायी (०) ययि (०) विषमयउय (०) भलकहिस्मभन ॥ सिंघोनीवेकवक हिडदः
 सिंघुरुग० धूमकावावगाव, कालयापूर्वगिगो, मधययवव, डादियानयधन ॥ जालाखाः
 आगमूखा, कुलयतिनगव, कामयूयसूय, डऊ न्यामदूहासयसूयगहनवलाउद (०) यदहा ॥ श्री

(०) लयालिजानयसूयतिनीलयरुमविद्यविलयू, श्रीमाकामादय (०) मयूय० गिव, ठाकिनीसा
 किनीनी ॥ कासिप्रवदय (०) यविठमलयक, वक्रवाककूयू, श्रीवाऊरुकाकडवगियीवऊ
 क, सिद्धिकउउहाव ॥ वयूयायाविजानहिमगिगिनिखय, काविद (०) यया (०) सोवाक्षमधय (०)
 रुययूविनगव, कासयकावूकवा ॥ कर्कटकाकनवामगधयूयवव, कर्कडुडि, कलिग, वाकूमः
 रूसवाहुरुमयऊयनयानवठांगलाक, मूकोहमाहवकूमनिगननिलय, दाहलयादय (०)
 वामोययूस्कावाकगिगिगहिउकवाकवसिंहनाद ॥ वगाखाहीमनादगिवयूयनगवरुडः

२८

कूलजयाखा श्रीविद्याखा ककुनुयवलगिनिगट ऊ ककुमे श्वलका वावा नस्यां विज्ञानप्रियथम्
नियथ शुद्धकूलयमा र्ज सुशुभ सुशुभ मर्जमलयगिनिगुहावक्र दहायववा रुडां एमूलथा
नयक नयवववसिहक कर्णगर्भक विष्णुयामम (ध्व) सुववव गयनग कला कसुलव । याजि
व्यामलुजाय विविधवधनूता मागयसु न्मर्वा नु ४ सिद्धा ४ सुसिद्धा विविधवधनूता दिव्यसिद्धिद
दनु ॥ षड् वामगुसिद्धि पूववव विगनख गतिवाचनम्वा गयसु र्मु विपुल वलियलिगजल्लसु र्मु न
सर्वविद्या दीर्घायर्षी कविलनिधिवसगुटि कायादू का कामसिद्धि सर्वो ल्यताददनु नूत्रियेसित

४०

वगा रुववेनानूनाका ॥ दृष्टवोलप्रिमा वीयहृग नगललविश्रयानत्र (नवा) याडदायजलोद्य
विद्यतयगुरुयं ध्यायिन् चर्माम्बुवा वौश्रुं कात्रयनिह उज्जितवच्चयनियिवनि नृह्यनिमग्रम
ताकिलिकिलिगकिलि ४ कोलराधी गीलनिासा शुक्ला कामत्रयायलववयनहल ह्रूं कात्रनादाड
हिवा नीलकं ० भूमवसूददया विन्दुमृदियसस्र ३३३ लात्रयनि नूत्रू धिन्नवसावाशमानास
वावा डि द्वाय - लालयनिललललललललाद्यावयनियिवनि कृष्ण कामा कदूनिभूमवग
ननूता विदूनायानलिनी गक्रसुसिद्धि कामायवमयदगगावद्विनार्गगगङ्गा यागल्ला ला क

गा२

यालागसयवनरुमायार्थिवलानूयूका, वषट्कविद्यूका, कुलकमलपगानावनिक्कुलाखावि
 दानाप्रदुजाकिः ४ सवदिसुठुगिर्वरीषणीरुद्रकाली, कौंकौंक कामयूया, श्रुकूलकुलगमाश्र
 विष्णुरुक्षयनि, सामथीकुट्टिकाखाविनयुयनर्मज्ञानदिवा ४ त्वमद्य ॥ वामूअकौमा (अकूल
 कमलमयकालनीकाकनाखा ॥ अखा नावाममा (अयकनिगलिलया, मालनिर्विदूदहा, कुंकाल
 मीठलवाश्रुकूलकुलमयायागिवकयविद्या श्रीना (थासंगगमायवलमूनिग (अवर्धितारुमीमः
 मूर्ति ४ सादवीलाकमानासिवसगनियूनामाष्ट श्रीनाथचक्र ॥ श्रीकं (अरिष्टमानाचक्रयूगसहिना

मध्वलिं (अविका कायी ० स्थायूयनियकयकिगकलाकोलमा (अदिताश्री नाम्ना श्रीकुट्टिकाखा
 प्रियथगनियूनागि कयागियकात्रा, नादवीनोमिनिर्ण, यकटिगनिलयायश्रकायान्तरिना, कालि
 कज्ञामयूयाकलिनगयवारीषणीरुक्षयनि, सामथीकुट्टिकावायकयकुमहा, ज्ञानदयायमूखा ॥
 १४ ॥ अगिमहावलि ॥ ॥ उवाविद्यामहाविद्या, विष्णुलाकषूद्वह्मरा, यस्यगिष्टमुखविद्या, समूका
 नागसंगया, रूतवनालयकाश्च, रुद्रकावुद्रकाकसा, विद्यासमयवमागुण, प्रावर्यतिदि (अदज्ञान
 यकयिरुद्रक्षय, विषलूफाचवद्धहा, सवर्नोनासयनिर्ण, सूर्यसूर्यनवान्यथा, नागवलावलिनामः

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

२॥८

[illegible]

नर्थनक॥ ग्रावारुनादिम्

निर्वानयूजो ॥ धूप दीप नेवडा ॥ जाय स्मरण ॥ ॥ प्रिय ॥ महामाया ॥ लघूकृत ॥ पंचमी सु
ववाज ॥ धन मून कमन माल कायालय ॥ ॥ किं किं दुख सुकल जननि कीय नन सुगाया ॥
का का की किं १ कल कमलिनी या यमना विगाया ॥ किं किं सोखा वन नून वन या यमन मुगा
या किं का गल यि विन नून विरु माल विगाया ॥ सुगारु वरु य धं सि पूडिता यि धुर्क वि। मु
गाली वां किं नय वि दया जिक पूजा कन ॥ यम मान नय वी धा द्वि नून जल नून यिणी ॥ लघूकृताना
ऊ गहा सि ललान दि निवरुन ॥ विदि धा नि सदा सरु माय माय न मा मुन ॥ सुदि सि लू य स

ह्यव. रुद्ररूपासनामनि ॥ त्वमवासिज गणका. युष्मतीनामयीविनी ॥ युष्मद्यात्मिकासि
 लं. जगन्महाकायलक्ष्या ॥ शून्यहायरुक्मानां जगन्महाकायलक्ष्या ॥ रुक्मस्यमनिरूपजा.
 मूकस्यपद्ममन्त्रि ॥ वेदिकाभोष्मिकिसिद्धि. दहिविदशर्वदिन ॥ नाययययविमृत्तान्. वदनं
 हिमगिरि ॥ नानाविदामिनशृङ्गामिनविन्मयामि. नानासमामिनशृङ्गामिनवाधयामि ॥ रुक्म
 लदीययययममृजमादयय. मागन्महाकायलक्ष्यामयिदहिसिद्धि ॥ शून्यानाद्यायमादादा. वः
 कल्याणायकस्यय ॥ यन्मूनमगिनिर्कवा. नत्सर्वकुरुमहसि ॥ दवाहीनक्रियाहीन. यद्वाम

नुविवर्जितं ॥ नत्सर्वकुरुययादवि. कमस्तर्लदयानिधे ॥ यन्मयाक्रियनकर्म. वद्वं वास्तव्यम
 ववा ॥ नत्सर्वकुरुययादवि. कमस्तर्लदयानिधे ॥ यन्मयाक्रियनकर्म. ज्ञायन्स्वप्नसूक्ष्मिषात
 सर्ववज्रगन्मागन्. कुरुयामयमजलि ॥ शून्यनशृङ्गा. दहिवग्नयनियानयन् ॥ ॥ दूधयूजा
 कयादावनाथव. यिरुवन ॥ दूधयूजा. यद्युनयनयाय ॥ धनधूनकाव. यूलूकसं. यद्युनयन ॥ स
 मय. दहिव. यिवनी. दूवन ॥ ॥ धनदूधकुरुयाविधान ॥ ॥ सानिकुरुयायनियानि ॥ यूलूः
 कुरु. नित्यकर्मयाय. वलिविसर्जनभायादनाथ ॥ ॥ धनलि. नाट्ययस. लखनहाय. यत. सिध्

ऊऊमका स्नानक्याव निह्यकर्मयादावरुय ॥ धूप दीप ज्ञाप साध ॥ ॥ धनलिसूय आदिनः
 व्याखनभा गायनवायन लासालावरुय स्वस्तिकसंगय दीपालाहननका ॥ नृव्यागुलखनहाय ॥
 गायनादिमूर्तिपूजा ॥ ॥ व्याखनभासाधनय ॥ मूलमन्त्रननित्रीकण ॥ नृमुनयाकनगाठन नृव
 र्मुन ॥ ॐ हूं हूं मलानृयवनेनवायदवदरुयायनाभयदूरुदू ॥ ॥ ॐ हूं हूं दयायनमः ॥
 संपूज ॥ ॥ ॐ शिवसऊयनयमन्त्र ॥ ॐ हूं हूं सरुसवाहयविद्वारु गाठुवायधामरु गन्नानृयः
 यथादयान् ॥ धर्ममन्त्र जिवातजयलय ॥ ॥ गलयति द्यायनविय ॥ ॥ विगकावपूजा ॥ शाह

विय ॥ खदिशगन व्याखनभा गयक ॥ आचार्यन मूलमन्त्रयालयाव गालयगिन ययक ॥ यन सिं
 ध्र सग्नन स्नानविय ॥ ॥ गतामारुनीविसर्जन ॥ मारुनीया दुरु दुरुसाय ॥ आचार्यन मारुनी
 दवसकगादाव धमभय ॥ डमाभयक व्याखनभासकलद गयक ॥ संखनलूय यमिका ॥ नृवनि ॥
 ॥ ॥ दवज्ञायाव यवज्ञक व्याखनदूयक ॥ धनलि दकिण ॥ ॥ यूलूकस यऊमानदवादाव
 यन दकिण ॥ नृवचुनादि नृरिसव सग्नन आजीर्वाद ॥ थलुनीनेहाय थिठिनिर्विधनन
 यक वीयकल गहाय भवकलसं नृरि गयविय ॥ धनधूनकाव यऊमानयिवन डथायसंग

य॥ ॥ नाट्यवस स्नानकाका र्थं निस्नान पत्रमूयका नाट्यवस स्नान नायादविय॥
 वलिविसर्जन साक्षि थाय दवनमस्का न ल्या खन दूयक ॥ धूस स लान विय वयन थिय
 काठ घाद्यन भावक ॥ ॥ धनलि कुमात्री पूजा ॥ रुसर्क १ ॥ धनमूल सिद्धि यविया नि ॥
 ॥ १ सप्त न १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ॥ मूय म्या यानि (थो) ॥ गगन रुचन कय ॥ वैधु नि या (ग) ॥ वधवा
 ल ॥ धक कू नाड कू य मला दवन धनाट्यव यर्धनि संपूर्ण या दन वाय धून का रुपा ॥ ॥
 यथा दृष्टं तथा लिखितं लक्षणा सिद्धावक ॥ ॥ गुरु ममु सर्वदा ॥ ॥  ॥

१ ग कि पूजा ॥ जे द्वां श्री ग कि वा दा व ठु ना सिव का व विन्दू गिका न रा क थ क थार्य व थ ख व स
 ला व का व ग कि न या ॥ जे क्की सो ४ या ई र्द न सिंदू व पू य विया व मूल न गुर्या डु लि का य यानि
 मूडा क न थ ना थ व ना भ व थ ला स ठु या व का या व या य ग कि विय जे क्की सो ४ ध र्क ॥ मू वि ना
 ल म रु व द र्द उ व म न ग भ व य वा ग ल म क रु य ना सि ना ड्डी सू ख सी य द ॥ ध न ग कि पू जा
 ॥ ॥ न ल ल म ध न ॥ जे क्की मू ल न ल सा ध या मि नू व या न व मू ल म क न न या र्प सी ला व य १
 व क्का स न स नी स हि ना नू य ध व स्या दि मा या न म क र्ति ग रु ला म न मू ल न ल ल म ध या मि

215

जिवाहं स्वाहा ॥ ॥ क्रीं क्रीं विद्यानर्त्तं अध्यामि नूनिच्छायाय विद्याऊनमकृर्नयाय स
हानय १ नक्ष्त्रीनायाय नूनि सहिनाय दुद्रविद्यादि सदाजिवान्कृतिगत्वात्मन विद्यानर्त्तं
अध्यामि जिवाहं स्वाहा ॥ ॥ सोऽं क्रीं जिवगत्वात्मन जिवगत्वं अध्यामि यत्र कृपाय विद्या
जिवऊनमकृर्नयाय सहानय १ यावन्तीं सदाजिवसहिनाय दुद्रविद्यादिजिवान्कृतिगत्वात्म
न जिवगत्वात्मन जिवगत्वं अध्यामि जिवाहं स्वाहा ॥ ॥ वै क्रीं सोऽं क्रीं सर्वगत्वं अध्या
मि सर्वऊनमकृर्नयाय सहानय १ यत्राम्बाय जिवसहिनाय धनव्यादिजिवान्कृतिगत्वा

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 तमनसर्वगत्यात्मनसर्वगत्यं ध्यायामि गिरिवाहं स्वाहा ॥ ॥ यागसवय ॥ ॥
 नृगैश्च नया ध्यान ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीगणेशाय नमः कयालीचराद्युवः यनमश्चर्यः ऊर्ध्ववाहनृत्यनूया उमनूतिगुनमवन, त्रिदधुस
 नवद्वीच, कर्लिकाश्रक्षमालिका, गथावामनृत्यनूर्य, खद्वान्नयनमवन, नागधनूस्तथाद्यष्ट
 कयालीचकमधुर्ल, सहस्रसूर्यसंकासं कालहित्रीं जनः पुंर, वृषासनसमानूठं, नृत्यगीर्जनः
 संपूर्ण, ऐनवर्नृत्यनूर्य, सर्वालकानसाहिर्न नव ध्यात्वा महादेवं नाद्यकार्यसुसिद्धिर्, मान

नृत्यञ्जनमूलमनु ॥ ॐ वृषास्त्राय नमः प्रियाक्षलि ॥ नृंश ॐ ह्रीं नृञ्जी महा नृत्यञ्ज
महेनवाय मृत्वा नृत्यलक्ष्मी सहिमायया हूका ॥ भदहर्नपुत्रा ॥

नृत्यञ्जराया पुत्रव ॥ ॐ ह्रीं नृनन्दिने महाहेनवाय नमः ॥ नृत्यञ्जनखवस ॥
ॐ ह्रीं ममहंका लहेनवाय नमः ॥